



Hargharpanditji

# ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भागों में) ॥

---

ॐ उमायै नमः

# FULL DISCLAIMER

---

*This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.*

*This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.*

*Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.*

*Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.*

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR"

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 1) ॥

नैमिषारण्ये ऋषियों ने सूत से पूछा कि देवी पार्वती का अवतार  
कैसे हुआ।  
तब सूत बोले—

पूर्वकाल में सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में देह त्याग दी।  
भगवान शिव विरक्त होकर समाधि में स्थित हो गए।  
देवताओं पर ताड़कासुर नामक असुर का अत्याचार बढ़ गया।  
ब्रह्मा ने कहा कि उसका वध केवल भगवान शिव के पुत्र से होगा।  
तब सभी देवताओं ने आदिशक्ति से प्रार्थना की। उसी समय  
पार्वती ने हिमवन और मीना के घर कन्या रूप में जन्म लिया।  
जन्म के समय आकाश से पुष्प वर्षा हुई, देवताओं ने स्तुति की,  
दिशाएँ प्रसन्न हुईं। कन्या का नाम रखा गया—पार्वती, क्योंकि वह  
पर्वतराज की पुत्री थीं।  
बाल्यकाल से ही देवी का मन भगवान शिव में लगा रहता था।

॥ इति अध्याय १ समाप्त ॥

HargharPanditji

THUA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 2) ॥

बाल्यावस्था से ही पार्वती का मन भगवान शिव में अनुरक्त था।  
जब युवावस्था आई, तब नारद जी ने हिमवन से कहा कि यह  
कन्या स्वयं महाशक्ति है और इसका विवाह भगवान शिव से होगा।  
तब पार्वती ने कठोर तप करने का निश्चय किया। वह वन में गई,  
आसन लगाकर भगवान शिव का ध्यान करने लगीं।  
पहले फलाहार किया, फिर पत्तों पर रहीं, फिर केवल जल पर  
रहीं, और अंत में निराहार तप किया। इसी कारण उनका एक नाम  
अपर्णा पड़ा, क्योंकि उन्होंने पत्ते तक नहीं खाए।  
हजारों वर्षों तक तपस्या से तीनों लोक चकित हुए। देवताओं ने  
प्रसन्न होकर उनकी स्तुति की।  
भगवान शिव ने उनकी परीक्षा लेने का विचार किया और एक  
ब्राह्मण रूप धारण कर वहाँ पहुँचे।  
॥ इति अध्याय २ समाप्त ॥

HargharPanditji

PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 3) ॥

तब भगवान शिव ब्राह्मण का रूप धारण कर पार्वती के तपस्थल पर पहुँचे। उन्होंने कहा—हे सुन्दरी, तुम किसके लिए ऐसा कठोर तप कर रही हो?

देवी ने विनम्रता से कहा—मैं भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करना चाहती हूँ।

ब्राह्मण रूपधारी भगवान बोले—शिव तो दिगम्बर हैं, भस्म धारण करते हैं, श्मशान में रहते हैं, नागों को आभूषण बनाते हैं। ऐसे वर को क्यों चाहती हो?

यह सुनकर पार्वती ने दृढ़ भाव से उत्तर दिया—आप भगवान शिव के स्वरूप को नहीं जानते। वे जगत्पति, करुणामय, सर्वज्ञ, परमेश्वर और योगेश्वर हैं। उन्हीं को मैं पति रूप में चाहती हूँ। देवी की अटूट निष्ठा देखकर भगवान प्रसन्न हुए। उन्होंने अपना दिव्य स्वरूप प्रकट किया।

पार्वती ने प्रणाम किया। भगवान शिव ने कहा—हे देवि, तुम्हारी तपस्या सफल हुई। मैं तुम्हें पत्नी रूप में स्वीकार करता हूँ। देवताओं ने आकाश से पुष्पवर्षा की।

॥ इति अध्याय ३ समाप्त ॥

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 4) ॥

भगवान शिव ने हिमवन को संदेश भेजा कि विवाह का शुभ समय आ गया है। पर्वतराज और मीना अत्यंत प्रसन्न हुए और विवाह की तैयारी करने लगे।

समस्त देवता, ऋषि, गंधर्व, यक्ष और सिद्धजन विवाह में उपस्थित हुए। भगवान शिव की बारात अद्भुत थी—गण, भूत, प्रेत, योगी और देव सभी साथ थे।

माता मीना ने जब प्रथम बार बारात देखी तो विस्मित हुई, पर बाद में भगवान शिव ने सुंदर दिव्य रूप धारण किया।

वेदमंत्रों के मध्य पार्वती और भगवान शिव का पाणिग्रहण संस्कार हुआ। देवताओं ने जयघोष किया, आकाश से पुष्प वर्षा हुई।

यह विवाह केवल एक दंपत्ति का नहीं, बल्कि शक्ति और शिव के मिलन का प्रतीक माना गया।

विवाह के बाद दोनों कैलास को प्रस्थान किए।

॥ इति अध्याय ४ समाप्त ॥

HargharPanditji

PURJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 5) ॥

विवाह के पश्चात् भगवान शिव और देवी पार्वती कैलास पर्वत पर विराजमान हुए। वहाँ सिद्ध, योगी, गण और देवता उनके दर्शन हेतु आते थे।

देवी पार्वती प्रेम, सेवा, ज्ञान और करुणा से कैलास को मंगलमय बनाती थीं। भगवान शिव उन्हें योग, तत्त्वज्ञान और ब्रह्मविद्या का उपदेश देते थे।

कभी दोनों के बीच मधुर वार्तालाप होता, कभी देवी संसार के कल्याण हेतु प्रश्न पूछतीं और भगवान उत्तर देते। अनेक आगम, तंत्र और ज्ञान परंपराएँ इन्हीं संवादों से प्रकट मानी जाती हैं। देवी ने एक समय लोकहित के लिए पूछा—जीव बन्धन से कैसे मुक्त हो? तब भगवान शिव ने भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और सत्याचार का मार्ग बताया।

कैलास पर उनका जीवन तप और प्रेम, ज्ञान और करुणा, शक्ति और शांति का आदर्श माना गया।

॥ इति अध्याय ५ समाप्त ॥

HargharPanditji

PURJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 6) ॥

एक दिन देवी पार्वती स्नान करने जा रही थीं। उन्होंने अपने उबटन के लेप से एक सुंदर बालक की रचना की और उसमें प्राण स्थापित किए।

देवी ने उस बालक से कहा—हे पुत्र, तुम द्वार पर पहरा दो। मेरी आज्ञा बिना किसी को भीतर प्रवेश न करने देना।

कुछ समय बाद भगवान शिव वहाँ आए और भीतर जाना चाहा। बालक ने माता की आज्ञा से उन्हें रोक दिया।

भगवान के गणों ने बालक को हटाने का प्रयास किया, पर वह अत्यंत पराक्रमी निकला और सबको पराजित कर दिया।

तब भगवान शिव ने क्रोध में उसका मस्तक काट दिया। यह समाचार सुनकर देवी पार्वती अत्यंत क्रोधित और शोकाकुल हुईं। उनके क्रोध से समस्त लोक कम्पित हो उठे।

देवताओं के निवेदन पर भगवान शिव ने उत्तर दिशा में मिले प्रथम जीव के मस्तक को लाने की आज्ञा दी। वह हाथी का मस्तक था।

भगवान ने उसे बालक के धड़ पर स्थापित कर पुनर्जीवित किया और वर दिया—तुम सब देवताओं में प्रथम पूज्य होगे। तभी से वे गणेश कहलाए।

देवी पार्वती प्रसन्न हुईं।

॥ इति अध्याय ६ समाप्त ॥

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 7) ॥

देवताओं पर ताड़कासुर का अत्याचार बढ़ता गया। उसे वरदान था कि उसका वध केवल भगवान शिव के पुत्र द्वारा ही हो सकता है। तब देवताओं ने भगवान शिव और देवी पार्वती से प्रार्थना की। दिव्य तेज प्रकट हुआ, जिसे अग्नि और गंगा ने धारण किया। उस तेज से एक दिव्य बालक प्रकट हुए, जिनका पालन कृतका ने किया। इसलिए उनका नाम कार्तिकेय पड़ा। वे स्कन्द, कुमार, षडानन और मुरुगन नामों से भी पूजित हैं। बालक शीघ्र ही तेजस्वी योद्धा बने। देवताओं ने उन्हें सेनापति बनाया।

उन्होंने युद्ध में ताड़कासुर का वध किया और देवताओं को भयमुक्त किया। देवी पार्वती ने पुत्र को आशीर्वाद दिया और समस्त लोकों में उत्सव मनाया गया।

॥ इति अध्याय ७ समाप्त ॥

Hargharpanditji

PULL ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 8) ॥

एक समय ऋषियों और देवताओं ने भगवान शिव से पूछा कि प्रकृति और पुरुष, शक्ति और शिव, स्त्री और पुरुष तत्त्व का वास्तविक संबंध क्या है।

तब भगवान शिव ने देवी पार्वती सहित अद्भुत रूप प्रकट किया। उनके अर्ध शरीर में भगवान शिव और अर्ध शरीर में देवी पार्वती विराजमान थीं।

यह दिव्य रूप अर्द्धनारीश्वर कहलाया। इस रूप से यह शिक्षा दी गई कि शिव बिना शक्ति के निष्क्रिय हैं और शक्ति बिना शिव के अपूर्ण है। सृष्टि का संचालन दोनों के समन्वय से होता है।

देवताओं ने इस रहस्य को प्रणाम किया। ऋषियों ने जाना कि समता, संतुलन और एकत्व ही परम सत्य है। देवी पार्वती और भगवान शिव पुनः अपने सामान्य रूप में प्रकट हुए।

॥ इति अध्याय ८ समाप्त ॥

Hargharpanditji

PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 9) ॥

एक समय भगवान शिव ने कहा कि यह संसार मिथ्या है और अन्न भी मायिक है। यह सुनकर देवी पार्वती ने विचार किया कि यदि अन्न न रहे तो जीवों का पालन कैसे होगा।

तब देवी ने समस्त संसार से अन्न अदृश्य कर दिया। पृथ्वी पर दुर्भिक्ष फैल गया, प्राणी व्याकुल हो उठे, यज्ञ रुक गए, दान बंद हो गया।

देवताओं ने प्रार्थना की। तब देवी पार्वती ने अन्नपुर्णा रूप धारण किया और काशी में सुवर्ण पात्र से अन्न वितरण करने लगीं। स्वयं भगवान शिव भिक्षापात्र लेकर वहाँ पहुँचे और देवी से भिक्षा ग्रहण की।

तब भगवान ने स्वीकार किया कि ज्ञान के साथ अन्न भी आवश्यक है। शरीर के बिना साधना नहीं हो सकती।

देवी ने पुनः संसार में अन्न की वृद्धि की। सभी लोक प्रसन्न हुए।

॥ इति अध्याय ९ समाप्त ॥

Hargharpanditji

PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 10) ॥

एक समय असुरों का बल अत्यधिक बढ़ गया। देवता पराजित होकर देवी पार्वती और भगवान शिव की शरण में गए। देवताओं के तेज से एक महान दिव्य शक्ति प्रकट हुई। वह देवी दुर्गा थीं—अनेक भुजाओं से युक्त, सिंहवाहिनी, दिव्य आयुध धारण किए हुए।

देवताओं ने उन्हें त्रिशूल, चक्र, धनुष, खड्ग, शंख और विविध अस्त्र प्रदान किए।

देवी ने असुर सेनाओं का संहार किया और धर्म की रक्षा की। उनके सिंहनाद से दिशाएँ कम्पित हो उठीं।

महादैत्य महिषासुर युद्ध के लिए आया। उसने अनेक रूप धारण किए, पर देवी ने अंततः उसका वध किया।

देवताओं ने स्तुति कर कहा—हे जगदम्बे, आप ही रक्षा, शक्ति और विजय की अधिष्ठात्री हैं।

देवी पुनः शांत स्वरूप में पार्वती रूप में प्रकट हुईं।

॥ इति अध्याय १० समाप्त ॥

HarGharPanditji

PUTA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 11) ॥

एक समय दुष्ट असुरों का अत्याचार अत्यंत बढ़ गया। देवताओं ने  
देवी पार्वती का स्मरण किया।  
तब देवी के क्रोध से उनके ललाट से एक भयंकर तेज प्रकट हुआ।  
वह उग्र रूप काली था—कृष्णवर्णा, विकराल, दुष्टसंहारिणी।  
देवी ने रणभूमि में प्रवेश किया। असुर सेना भयभीत हो उठी।  
अनेक दैत्यों का विनाश हुआ।  
जब रक्त से उत्पन्न होने वाले असुरों ने पुनः पुनः जन्म लेना  
आरम्भ किया, तब देवी ने उनका रक्त पृथ्वी पर गिरने से पूर्व ही  
ग्रहण किया और उनका संहार किया।  
देवताओं ने स्तुति की—हे महाशक्ति, आप ही करुणा और आप  
ही कालस्वरूप हैं।  
युद्ध समाप्त होने पर देवी का क्रोध शांत हुआ और वे पुनः पार्वती  
के मंगलमय स्वरूप में प्रकट हुईं।  
सभी लोकों में शांति स्थापित हुई।

॥ इति अध्याय ११ समाप्त ॥

HargharPanditji

PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 12) ॥

एक समय ऋषियों, देवताओं और भक्तों ने देवी पार्वती की स्तुति कर उनसे कल्याण का मार्ग पूछा।

देवी ने कहा—जो मनुष्य श्रद्धा, सत्य, दया और भक्ति से मेरा स्मरण करता है, उसके जीवन के विघ्न दूर होते हैं। जो माता-पिता, गुरु, अतिथि और प्राणियों का सम्मान करता है, वह मुझे प्रिय है।

देवी ने कहा—धन से अधिक धर्म, बल से अधिक संयम, और ज्ञान से अधिक विनम्रता श्रेष्ठ है। जो दूसरों के दुःख में सहायक बनता है, उसे मेरा आशीर्वाद प्राप्त होता है।

भगवान शिव भी वहाँ प्रकट हुए और बोले—जो शक्ति का सम्मान करता है, वही जीवन के संतुलन को समझता है।

देवी ने भक्तों को सौभाग्य, आरोग्य, शांति और सद्बुद्धि का वर दिया।

ऋषियों ने प्रणाम किया। देवताओं ने पुष्पवृष्टि की। समस्त दिशाएँ मंगलमय हो उठीं।

जो इस कथा को श्रद्धा से सुनता या पढ़ता है, उसे मातृकृपा प्राप्त होती है।

॥ इति अध्याय १२ समाप्त ॥

## ॥ शिवपुराण पार्वती जी कथा (भाग 13) ॥

ऋषियों ने कहा—हे सूतजी, देवी पार्वती की यह दिव्य कथा अत्यंत पवित्र है। इसका श्रवण करने से क्या फल प्राप्त होता है? सूत बोले—जो पुरुष या स्त्री श्रद्धा से देवी पार्वती की जन्म, तपस्या, विवाह, मातृत्व और महाशक्ति स्वरूप की कथा सुनता है, उसके पाप क्षीण होते हैं और मन शुद्ध होता है। जो अविवाहित कन्या श्रद्धा से इसका पाठ सुनती है, उसे उत्तम वर की प्राप्ति होती है। जो दम्पति सुनते हैं, उनके घर में सौहार्द बढ़ता है। जो दुःखी सुनते हैं, उन्हें धैर्य प्राप्त होता है। जो विद्यार्थी सुनते हैं, उन्हें एकाग्रता मिलती है। जो साधक सुनते हैं, उन्हें भक्ति और शक्ति प्राप्त होती है। देवी पार्वती सब पर कृपा करती हैं, क्योंकि वे जगज्जननी हैं। ऋषियों ने आनंदपूर्वक प्रणाम किया और कहा—जय जगदम्बे, जय गौरी, जय उमा महेश्वरी।

॥ इति अध्याय १३ समाप्त ॥

॥ इति पार्वती कथा समाप्त ॥

HarGharPanditji

INSTALL ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR